International Journal of Social Science and Economic Research

ISSN: 2455-8834

Volume:02, Issue:12 "December 2017"

JANPAD SHAHJAHANPUR KA AUDYOGIK SWAROOP EVAM VARGIKARAN

जनपद शाहजहांपुर का औद्योगिक स्वरुप व वर्गीकरण

Dr. Vineet Kumar Saini

Assistant Professor , Department Of Geography, Gandhi Faiz-E-Aam College, Shahjahanpur

सारांश

भारत 1947 से स्वतंत्रता के बाद से औद्योगिक विकास के अपने मार्ग पर अग्रसर हुआ। भारत एक कृषि प्रधान देश हैं और यहां की अर्थव्यवस्था एक विकासशील अर्थव्यवस्था हैं परन्तु यहां वृहत व मध्यमस्तरीय तथा लघु एवं कुटीर उद्योगों की प्रगति पर निरन्तर ध्यान दिया जा रहा हैं तथा अनेक योजनाओं तथा नीतियों को कार्यवानवित किया जा रहा हैं। जैसे 1948 का औद्योगिक नीति प्रस्ताव तथा 1991 की नई औद्योगिक नीति भारत को एक विकसित देश बनाने के निरन्तर प्रयास किये जा रहे हैं। परन्तु यह प्रयास भी तभी सफल होगें जब देश में उद्योगों का विकास होगा।

जनपद शाहजहांपुर औद्योगिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ जनपद हैं किन्तु शर्ने–शर्ने यहां वृहत व मध्यमस्तरीय और लघु एवं कुटीर उद्योग जनपद के औद्योगिक विकास में मुख्य भूमिका अदा कर रहा हैं। जनपद शाहजहांपुर में कार्यरत वृहत व मध्यमस्तरीय उद्योग तथा लघु एवं कुटीर उद्योगों का स्वरुप एवं वर्गीकरण, उद्योगों की स्थिति एवं विकास तथा उद्योगों का स्वरुप एवं वर्गीकरण, उद्योगों की स्थिति एवं विकास तथा उद्योगो को प्राप्त होने वाली सुविधाओं का अध्ययन किया गया है।

मुख्य शब्द : औद्योगिक, कृषि, लघु एवं कुटीर उद्योग, भूमि, पूॅजी, श्रम, पूंजी।

प्रस्तावना

कोई भी जनपद निर्माण उद्योग के क्षेत्र में जितनी उन्नति करता हैं, उतनी ही उसकी आय बढ़ती हैं और वह धनाड्य शहर बन जाता है। देश के प्रत्येक जनपद की औद्योगिक स्थिति सुदृढ़ होने से एक शहर की नही, एक राज्य की ही नहीं वरन् देश की भी औद्योगिक दशा सुद्ढ़ होती हैं। औद्योगिक विकास ही किसी जनपद, राज्य एवं देश की आर्थिक सम्पन्नता का मापदण्ड हैं।

विनिर्माण उद्योग का अर्थ

कच्ची सामग्री को उत्पादन के साधनों (भूमि, पूॅजी, श्रम, संगठन, साहस) की सहायता से संसाधित और परिवर्तित करके तैयार सामग्री बनाना ही विनिर्माणी उद्योग कहलाता हैं। कपास से कपड़ा, लुगदी से

 Copyright © IJSSER 2017, All rights reserved

ISSN: 2455-8834

Volume:02, Issue:12 "December 2017"

कागज, खनिज तेल से रासायनिक पदार्थ तथा लौह अयस्क से इस्पात एवं गन्ने से चोनी बनाने का प्रक्रम निर्माण उद्योग है।[1] अतः निर्माण उद्योग की तीन विशेषतायें हैं[2] –

1. किसी एक वस्तु का रुप आकार बदलकर दूसरी वस्तु बन जाती है, जैसे – लकड़ी का रुप बदलकर फर्नीचर बन जाता हैं या लोहे का रुप बदलकर यंत्र बन जाता हैं।
2. निर्माण द्वारा वस्तु या पदार्थ का उपयोग बदल जाता है, जैसे – खेत में उगी हुई कपास निर्माण के बाद वस्त्र के रुप में पहन ली जाती हैं।
3. निर्माण द्वारा पदार्थ की गुण–वृद्धि और मूल्य वृद्धि हो जाती हैं, जैसे – लोहे की मोटरकार या घड़ी बनाने पर अथवा एल्यूमिनियम का वायुमान बनाने पर धातु के मूल्य में सैकड़ा गुना बृद्धि हो जाती हैं।

वृहत एवं मध्यमस्तरीय उद्योग

किसी भी क्षेत्र का विकास विभिन्न क्षेत्र (प्राथमिक क्षेत्र–कृषि, द्वितीय क्षेत्र–उद्योग, तृतीय क्षेत्र–सेवाऐं) के पारस्परिक सहयोग से होता हैं। कृषि लोगो को रोजगार तथा जीविका प्रदान करती हैं। कुटीर, ग्रामीण एवं लघु उद्योग रोजगार देकर कृषि पर जनसंख्या के भार को कम कर देते हैं और लोगों की अजीविका का साधन बनते हैं परन्तु वृहत उद्योग किसी क्षेत्र के विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं तथा क्षेत्र की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ बनाते हैं। इस प्रकार जिन उद्योगों में 5 करोड़ से अधिक पूंजी निवेशित होती है तथा उत्पादन कार्य विशाल स्तर पर होता हैं उसे वृहत उद्योग कहते हैं।

मध्यमस्तीय उद्योग

वे उद्योग, जिनमें प्लाण्ट एवं मशीनरी के मद में 75 लाख से अधिक तथा 5 करोड़ तक पूंजी विनियोजिन हुआ हो मध्यम स्तरीय उद्योग के अंर्तगत आते हैं।

जनपद ‘ शाहजहांपुर औद्योगिक दृष्टि से पिछड़ा जनपद हैं, भारत सरकार ने इसे श्रेणी ‘सी’ में घोषित किया हैं। जनपद शाहजहांपुर में वृहत ओर मध्यमस्तरीय उद्योग की संख्या अधिक नही हैं। अतः जनपद में वृहत और मध्यमस्तरीय उद्योग की स्थिति बहुत सोचनीय हैं, परन्तु सन् 1979 में जिला उद्येग केन्द्र की स्थापना के पश्चात् उसके अंकय प्रयासों के फलस्वरुप जनपद में वर्तमान समय में 10 वृहत एवं मध्यस्तरीय उद्योग स्थापित हैं। इसमें केवल 4 वृहतस्तरीय उद्योग है, जिनमें – मै0 आर्डनेन्स क्लोदिंग फैक्ट्री (जोकि रक्षा मंत्रालय के आधीन है आर वस्त्रों का उत्पादन करती हैं), मै0 ओसवाल कैमिकल्स एवं फर्टिलाइजर पिपरौला (उर्वरक एवं रसायन का उत्पादन), मै0 दि किसान सहकारी चीनी मिल, पुवायां (शुगर

 Copyright © IJSSER 2017, All rights reserved

ISSN: 2455-8834

Volume:02, Issue:12 "December 2017"

तथा शीरा का उत्पादन) इस प्रकार वृहत क्षेत्र में जनपद के प्रमुख औद्योगिक उत्पादन एल्कोहल, चीनी, साल्वेट, ऑयल, रिफाइन्ड ऑयल तथा वस्त्र आदि हैं।

जनपद शाहजहांपुर के वृहद एवं मध्यमस्तरीय उद्योगों का उपयोगिता के आधार पर वर्गीकरण –

1. आधारभूत उद्योग

ऐसे उद्योग जिन पर कई उद्योग निर्भर करते है, आधारभूत उद्योग कहलाते हैं अर्थात एक उद्योग का तैयार माल दूसरे उद्योग के लिये कच्चे माल का काम करता हैं, आधारभूत उद्योग कहलाता हैं। लोहा–इस्पात उद्योग, भारी मशीन उद्योग, पेट्रो रसायन उद्योग, सीमेण्ट उद्योग आधारभूत उद्योगों के उदाहरण हैं। इन उद्योगों में विशाल पूंजी भारी एवं कच्चा माल एवं बड़ी बड़ी मशीनों का प्रयोग होता हैं। जनपद शाजहांपुर में केवल एक आधारभूत उद्योग कृभकों–श्याम कैमिकल्स एवं फर्टिलाइजर पिपरौला, शाहजहांपुर में स्थापित हैं, जहां उर्वरक एवं रसायन का उत्पादन किया जा रहा हैं।

2. उपभोक्ता उद्योग

हम अपने दैनिक जीवन में अनेकानेक वस्तुओं का उपयोग करते हैं। ऐसे उद्योगों का जो मुख्यतः लोगों के उपयोग की वस्तुओं का उत्पादन करते हैं उपभोक्ता उद्योग कहते हैं। उदाहरण के लिए वस्त्र उद्योग, चीनी उद्योग, वनस्पति तेल उद्योग, मार्डन बेकरी, हौजरी उद्योग आदि उपभोक्ता उद्योग हैं। इन उद्योगों के द्वारा तैयार करने वाली वस्तुओं को लोग उपयोग करते हैं। इस प्रकार लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करने में ही उत्पादित वस्तुयें समाप्त हो जाती हैं। इन वस्तुओं की मांग निरन्तर बनी रहती हैं, परन्तु जनसंख्या बढ़ने पर इनकी मांग में एकाएक वृद्धि हो जाती हैं।

स्वंय सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ है कि जनपद शाहजहांपर में कई उपभोक्ता मूलक उद्योग स्थापित किये गये हैं। उदाहरण आर्डनेन्स क्लोदिंग फैक्ट्री शाहजहांपुर (वस्त्रों का उत्पादन), मै0 दि किसान सहकारी चीनी मिल, पुवायां एवं मै0 दि किसान सहकारी चीनी मिल तिलहर (शुगर तथा शीरा का उत्पादन) वृहत स्तरीय उपभोक्तामूक उद्योग ह। मै रोजा बर्क्स (चीनी तथा शीरा का उत्पादन), मै0 केरु एण्ड कम्पनी रोजा (एल्कोहल का उत्पादन), मै0 जानकी एक्सट्रेक्शन रोजा (रिफाइन्ड आयल का उत्पादन), मै0 जानकी फ्लोर मिल रोजा (आटे का उत्पादन), मै0 शाहजहांपुर पेपर बोर्ड प्राइवेट लिमिटेड, शाहजहांपुर (पेपर व काड का उत्पादन), मै0 एम0सी0 रोलर फ्लोर मिल जमुही, शाहजहांपुर (आटा एवं मैदे का उत्पादन) आदि फैक्ट्रियॉ मध्यमस्तरीय उपभोक्ता मूलक उद्योग हैं।

 Copyright © IJSSER 2017, All rights reserved

ISSN: 2455-8834

Volume:02, Issue:12 "December 2017"

तलिका (1) जनपद में स्थापित वृहद एवं मध्यमस्तरीय मुख्य उद्योगों की सूची

(आई0ई0एम0 एवं एल0ओ0एम0 प्राप्त इकाइयों को सूची)

क0सं0	इकाई का नाम	इकाई का पता	उत्पाद का नाम
1.	मै0 कृभको श्याम फर्टीलाइजर्स	पिपरौला, शाहजहांपुर	यूरिया खाद
2.	के0आर0 पल्प एण्ड पेपर लि0	जमौर, शाहजहांपुर	अनकोटेड क्राफ्ट पेपर एण्ड पेपरबोर्ड
3.	श्री जानकी एक्सटेशन एण्ड रिफाइनरी	ग्राम जमुही, रोजा, शाहजहांपुर	सोयाबीन तेल
4.	श्री जानकी साल्वेन्ट एक्सटेशन लि0	निवाजपुर, रोजा, शाहजहांपुर	सरसों का तेल, कूड आयल
5.	मेसर्स मैक्डावल एण्ड कम्पनी लि0	रोजा, शाहजहांपुर	इयइिल अल्कोहल
6.	मेसर्स श्री जानकी वनस्पति उद्योग	ग्राम जमुही, रोजा, शाहजहांपुर	वनस्पति
7.	टोजस इण्डस्ट्रीज प्रा0लि0	पहाडपुर, शाहजहांपुर	व्हाईट क्रिस्टल शुगर
8.	विद्या प्लाई बोर्ड प्रा0 लि0	लालपुर, शाहजहांपुर	प्लाई बोर्ड
9.	रोजा शुगर वर्क्स	रोजा	व्हाईट क्रिस्टल शुगर
10.	मै0 मुकुन्द माधव रोलर फ्लोर मिल्स	दौलतपुर, महोलिया, पुरनपुर रोड़, बण्ड़ा, शाहजहांपुर	फ्लोर
11.	के0 आर0 पेपर मिल	पिपरौला, शाहजहांपुर	क्राफ्ट पेपर
12.	मेसर्स रोजा शुगर वर्क्स	जलालाबाद रोड़, शाहजहांपुर	चीनी
13.	मेसर्स ओसवाल केमिकल्स एण्ड फर्टिलाइजर	पिपरौला, शाहजहांपुर	उर्वरक रसायन
14.	मेसर्स आर्डनेन्स क्लोदिंग फैक्ट्री	कैण्ट, शाहजहांपुर	कंबल, मोजे, पैराशूट
15.	मेसर्स किसान सहकारी चीनी मिल	तिलहर, शाहजहांपुर	चीनी

 Copyright © IJSSER 2017, All rights reserved

ISSN: 2455-8834

Volume:02, Issue:12 "December 2017"

16.	मेसर्स किसान सहकारी चीनी मिल	पुवायां, शाहजहांपुर	चीनी
17.	जी सर्जिवेयर लिमिटेड फैक्टरी	रेती, शाहजहांपुर	सर्जिकल एवं चिकित्सा उपकरण

स्त्रोत – महाप्रबंधक जिला उद्योग केंद्र, शाहजहांपुर

तालिका –1 के अनुसार जनपद शाहजहांपुर में 17 मुख्य वृहत एवं मध्यमस्तरीय उद्योग हैं। यह सभी उद्योग कार्यरत उद्योग है तथा यह निरन्तर अपेक्षित प्रगति की ओर अग्रसर हैं। इस तालिका में दर्शायी गई कुछ इकाइयां लघु उद्योगों में परिवर्तित कर दी गई है। जो निम्नवत् हैं–

1. श्री जानकी एक्सटेशन एण्ड रिफाइनरी ग्राम जमुही, रोजा, शाहजहांपुर।
2. विद्या प्लाई बोर्ड प्रा0लि0 लालपुर, शाहजहांपुर।
3. मै0 मुकुन्द माधव रोलर फ्लोर मिल्स, दौलतपुर, महोलिया, पुरनपुर रोड़, बण्ड़ा, शाहजहांपुर।

तलिका (2) जनपद में स्थापित परन्तु बन्द वृहद एवं मध्यमस्तरीय मुख्य उद्यागों की सूची

क0सं0	इकाई का नाम	इकाई का पता	उत्पाद का नाम
1.	जे0एस0पी ऑयल एण्ड फैटज लि0	मोहम्मदी रोड़, शाहजहांपुर	बेजीटेबल ऑयल
2.	जे0एस0पी एण्ड फैटज लि0	ग्राम करौंदा शाहजहांपुर	बेजीटेबल फैटेज
3.	फलोटेक फिटिंग्स प्रा0 लि0	जलालाबाद रोड़, ग्राम पिपरौला, शाहजहांपुर	पाइप व प्लास्टिक प्रोडक्ट्स
4.	आर0 एस0 बिल्डर्स एवं इंजीनियर्स लि0	पिपरौला, शाहजहांपुर	फेबीकेटेड आइटम्स

स्त्रोत – महाप्रबंधक जिला उद्योग केंद्र, शाहजहांपुर

लघु एवं कुटीर उद्योग

जनपद शाहजहांपुर में वर्ष 2015–16 में 9021 पंजीकृत कारखाने, लघु औद्योगिक इकाइयॉ व खादी ग्रामोद्योग इकाइयॉ कार्य कर रही हैं। इन लघु औद्योगिक इकाइयों में लगभग 50 हजार से अधिक व्यकित कार्यरत हैं। इसके साथ ही इससे कुल लगभग 6099.17 लाख रुपये की पूंजी का निवेश हुआ हैं।[3] परन्तु वर्तमान समय में जनपद में कुल 15,421 इकाइयां स्थापित है। जिसमें लगभग 80 हजार व्यक्ति कार्यरत हैं। जिसमें लगभग 16772.25 लाख रुपये का निवेश हुआ हैं।[4]

 Copyright © IJSSER 2017, All rights reserved

ISSN: 2455-8834

Volume:02, Issue:12 "December 2017"

लघु एवं कुटीर उद्योगों का अर्थ

लघु उद्योगों में ऐसी समस्त औद्योगिक इकाइयॉ सम्मिलित की जाती हैं जिनमें मशीनों एवं संयन्त्रों में पूजी विनियोजन की मात्रा 60 लाख रुपये तथा इससे कम हो।[5] लद्यु उद्योगों में सहायक उद्योगों को भी सम्मिलित किया जाता हैं। सहायक उद्योगों से आशय ऐसी औद्योगिक इकाइयों से हैं जो संयन्त्रों के कलपुर्जो का उत्पादन करती है तथा जो स्वयं के द्वारा उत्पादित वस्तुये, सेवा के कुल भाग का कम से कम 5 प्रतिशत भाग की पूर्ति किसी अन्य औद्योगिक इकाई अथवा इकाइयों को करती है। सहायक उद्योगों के लिये मशीन एवं संयन्त्रों में विनियोजित पूंजी की सीमा अब 75 लाख रुपये निर्धारित की गयी हैं।[6] अति लद्यु क्षेत्र के लिये यह सीमा 5 लाख रुपये निर्धरित की गई हैं।

कुटीर उद्योग एक ऐसा उद्योग है जो पूर्णतः प्रमुखतः परिवार के सदस्यों द्वारा पूर्णकालीन अथवा अंशकालीन धंधे के रुप में संचालित किया जाता हैं। कुटीर उद्योगों में पूॅजी विनियोजन नाममात्र का होता हैं। उत्पादन प्रायः हाथ से किया जाता हैं और शक्ति चलित यंत्रों का उपयोग अपेक्षाकृत कम होता हैं। कुटीर उद्योगों को दो वर्गो में बांटा सकता हैं[7] –

1. **ग्रामीण कुटीर उद्योग**
2. **शहरी कुटीर उद्योग**

ग्रामीण कुटीर उद्योग में भी दो वर्ग पाये जाते हैं, पहला वर्ग कृषि से सम्बन्धित हैं तथा दूसरा वर्ग में ग्रामीण कौशल से सम्बन्धित हैं। पहले वर्ग में कताई, डेयरी, मुर्गीपालन, रस्सी, टोकरी आदि बनाना तथा दूसरे वर्ग में मिट्टी के बर्तन, कपड़ा, बुनना, जूते एवं अन्य चमड़े के सामान, तेलघानी उद्योग सम्मिलित हैं।

‘ शहरी कुटीर उद्योगों में साबुन, बीड़ी, लकड़ी के सामान, हथकरघा आदि अनेक उद्योग–धन्धें सम्मिलित हैं।

लघु एवं कुटीर उद्योगों का महत्व

विश्व के प्रायः सभी देशों में लद्यु एवं कुटीर उद्योगों का महत्वपूर्ण स्थान माना जाता हैं। जापान जैसें औद्योगिकृत देशों में भी हम बड़े उद्योगों एवं कुटीर तथा लद्यु उद्योगो का उत्तम समन्वय देखने को मिलता है। अल्पविकसित अथवा विकासशील देशों में जहां पूजीं का अभाव तथा जनशक्ति की अधिकता पायी जाती हैं, छोटे पैमाने के उद्योगों की उपयोगिता ओर भी अधिक होती हैं।

भारतीय अर्थव्यवस्था में लद्यु एवं कुटीर उद्योगों का महत्व निम्नकारणों स हैं –

 Copyright © IJSSER 2017, All rights reserved

ISSN: 2455-8834

Volume:02, Issue:12 "December 2017"

1. लघु एवं कुटीर उद्योग में उच्च–रोजगार की सम्भापनाये पायी जाती हैं, जिससे बेरोजगारी जैसी भीषण समस्या का समाधान किया जा सकता हैं।

2. साधारण तकनीकी ज्ञान, कम पूॅजी एवं मानवीय दक्षताओं एवं कलात्मक रुचियों का उपयोग करके लघु एवं कुटीर उद्योगों के द्वारा विविध प्रकार की लाख वस्तुओं का उत्पादन किया जा सकता हैं।

3. लघु एवं कुटीर उद्योग आर्थिक ' शाक्ति के केन्द्रीकरण को कम करके सम्पत्ति एवं आय को असमानताओं को कम करने में सहायक होते है तथा आर्थिक गतिविधियों कें केन्द्रीयकरण द्वारा प्रादेशिक असन्तुनों में भो कमी करते हैं।

4. लघु उद्योग बड़े उद्योगों में सहायक उद्योगों के रुप में भी कुशलतापूर्वक कार्य करते हैं।

5. लघु एवं कुटीर उद्योगों में निर्मित अनेक कलात्मक वस्तुये, कालीन व गलीचे व जरी का समान विदेशों को निर्यात करके काफी मात्रा में विदेशी मुद्रा अर्जित की जाती हैं।

6. ग्रामीण क्षेत्र में लघु एवं कुटीर उद्योगों के विकास के कृषि पर जनसंख्या के भार में कमी होती हैं। जिससे भूमि के उपखण्डन तथा उप–विभाजन की समस्या दूर होने लगती हैं।

7. यदि लद्यु कुटीर उद्योगों के तकनीकी स्तर में कुद सुधार किया जाये एवं बिजली से संचालित छोटी मशीनों के उपयोग की सुविधाये उन्हे दी जाये तो छोटे उद्योगों की उत्पादकता में सुधार किया जा सकता है और राष्ट्रीय आय में इनसे और अधिक योगदान की आशा की जा सकती हैं।

8. लघु एवं कुटीर उद्योग मध्यमवर्गीय परिवारों के लिए अतिरिक्त आय का साधन बन सकते है।

उद्योगों का वर्गीकरण

प्लाण्ट एवं मशीनों में किये गये पूजी विनियोग की मात्रा के आधार पर शासन द्वारा उद्योगों का वर्गीकरण निम्नलिखित हैं –

लघु उद्योग

वह उद्योग जिसमें प्लाण्ट एवं मशीनरी में पूंजी विनियोग की मात्रा 60 लाख रुपये तक हो, लघु उद्योग कहलाते है।[8]

 Copyright © IJSSER 2017, All rights reserved

ISSN: 2455-8834

Volume:02, Issue:12 "December 2017"

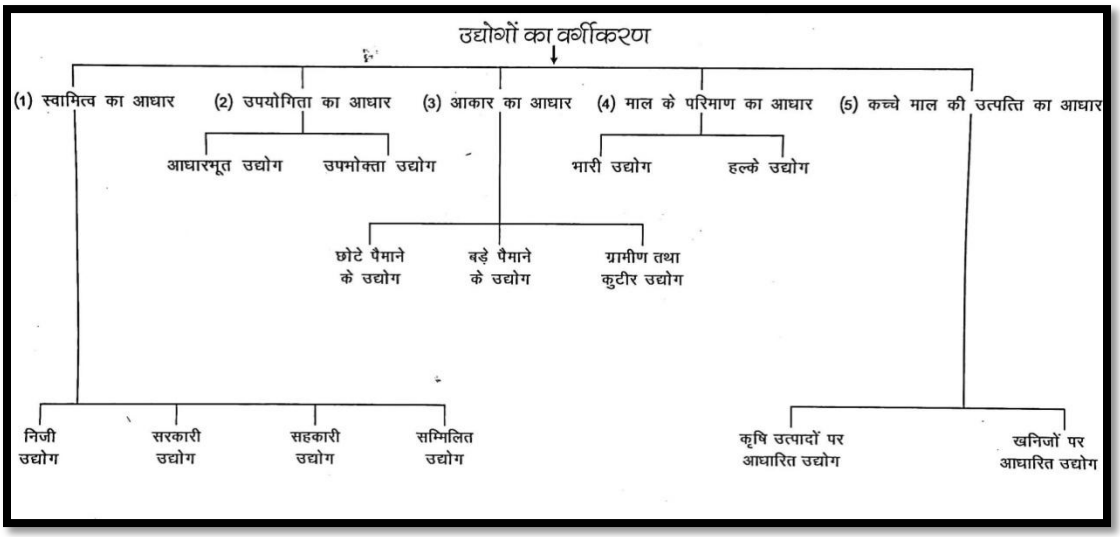

स्त्रोत – NCRT समकालीन भारत 2000

कुटीर उद्योग

वह उद्योग जिसमें प्लाण्ट एवं मशीनरी के मद में 5 लाख रुपये तक का पूंजी विनियोजन किया गया हो तथा 1981 की जनगणना के अनुसार 5 हजार तक की आबादी वाले क्षेत्र में स्थापित हो गयी हैं।[7]

खादी एवं ग्रामोंद्योग

ऐसे उद्योग जो खादी ग्रामोद्योग द्वारा अनुदानित है जैसे –

1. काष्ठकला एवं लौहकला, 2. बांस एवं बेत, 3. गुड़ एवं खण्डसारी, 4. रेशा, 5. अनाज एवं दाल, 6. फल संरक्षण, 7. ताड़ गुड़ एवं ताड़ वस्तु, 8. कत्था, 9. ग्रामीण तेल, 10. गोंद उत्पादन, 11. ग्रामीण कम्हारी, 12. खाद तथा मिथेन गैस का उत्पादन, 13. ग्रामीण चर्म, 14. अल्यूमिनियम के घरेलू बर्तन, 15. दियासलाई, 16. वनौषधि संग्रह, 17. मधुमक्खी पालन, 18. चूना उद्योग, 19. लाख उत्पादन, 20. हथकरघा, 21 अखाद्य तेल एवं साबुन, 22 खाल उतारना आदि।

हस्तशिल्प

ऐसे उद्योग जिनमें पावर का प्रयोग न किया जाता हो तथा कलात्मक वस्तुओं का उत्पादन हाथ द्वारा किया जाता हों, हस्तशिल्प के अर्न्तगत आते हैं।

मध्यमस्तरीय उद्योग

वह उद्योग, जिनमें प्लाण्ट एवं मशीनरी के मद में 75 लाख रुपये से अधिक तथा 5 करोड़ तक का पूंजी विनियोजन किया हुआ हो मध्यमस्तरीय उद्योग के अर्न्तगत आते हैं।

 Copyright © IJSSER 2017, All rights reserved

ISSN: 2455-8834

Volume:02, Issue:12 "December 2017"

वृहत उद्योग

वह उद्योग, जिनमें प्लाण्ट एवं मशीनरी के मद में 5 करोड़ से अधिक तक का पूंजी विनियोजन किया हो वृहत उद्योग कहलाते हैं।

सहायक उद्योग

सहायक उद्योगो से आशय ऐसी औद्योगिक इकाईयों से है जो संयत्रों के कलपुर्जो का उत्पादन करती हैं तथा स्वयं के द्वारा उत्पादित वस्तु या सेवा के कुल भाग का कम से कम 60 प्रतिशत भाग की पूर्ति किसी अन्य औद्योगिक इकाई अथवा इकाईयों को करती हैं। सहायक उद्योगों में विनियोजित पूंजी की सीमा अब 75 लाख रुपये निर्धारित की गई हैं।

उपसंहार एवं संभावनायें

जनपद शाहजहांपुर औद्योगिक दृष्टि से काफी पिछड़ी अवस्था में हैं। भारत सरकार द्वारा इसे श्रेणी ''सी'' में घोषित किया हैं। जनपद के औद्योगिक विकास में जिला उद्योग केन्द्र तथा खादी ग्रामोंद्योग बोर्ड की सक्रिय भूमिका हैं। जिनके द्वारा लद्यु एवं कुटीर उद्योग के विकास के लिये विभिन्न प्रकार की सुविधायें दी जाती हैं। फिर भी जनपद में वित्त पोषण, प्रशिक्षण, निर्यात सम्बन्धी प्रमुख समस्याओं क कारण औद्योगिक विकास संतोषजनक नहीं हो पाया हैं।

जनपद में कुल 10 वृहत एवं मध्यमस्तरीय उद्योग स्थापित है जिसमें 4286 व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त हुआ हैं व 3110.04 लाख रुपये का पूॅजी विनियोजन हुआ हैं। जनपद में वृहत उद्योगों की संख्या केवल 5 है जो जनपद की संख्या, क्षेत्रफल तथा भौगोलिक स्थिति को देखते हुये पर्याप्त नही हैं परन्तु कुछ विकास खण्डों जैसे तिलहर, जलालाबाद और पुवायां में वृहत उद्योग की स्थापना को संभावनायें मौजूद हैं।

–: संदर्भ :–

1. संसाधन भूगोल. 2015 – 16 डा0 आर0डी0 कौशिश व अलका गौतम
2. औद्यौगिक स्टेटस जनपद शाहजहांपुर, जिला उद्योग केन्द्र, शाहजहांपुर।
3. डा0 आर0एस0 कुलश्रेष्ठ, पृष्ठ–584।
4. महाप्रबंधक, जिला उद्योग केन्द्र, शाहजहांपुर।
5. डिपार्टमेंट ऑफ स्माल – स्केल इण्डस्ट्रीज ग्रो एण्ड रुरल इण्डस्ट्रीज मिनिस्ट्री ऑफ इण्डस्ट्रीज एनुअनल रिपोर्ट, 1993–94।

 Copyright © IJSSER 2017, All rights reserved

ISSN: 2455-8834

Volume:02, Issue:12 "December 2017"

6. डा0 आर0एस0 कुलश्रेष्ठ, औद्योगिक अर्थशास्त्र, साहित्य भवन पब्लिकेशन, 1996 पृष्ठ–584।
7. औद्योगिक प्ररेणा ''जिला उद्योग केन्द्र, शाहजहांपुर 29 मार्च, 1991 पृष्ठ–1

 Copyright © IJSSER 2017, All rights reserved